महान शिक्षाविद डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एवं डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

मलखान मीणा
अस्सिटेंट प्रोफेसर
राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, जयपुर

सारांश

वर्तमान समय में जब देश आजाद हो गया है, तब भी अनुशासनात्मक, अध्यापक का स्थान, उद्देश्य, शिक्षण विधि, भाषा विकास, विद्यार्थी, तकनीकी शिक्षा आदि के संबंध में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम एवं डॉक्टर राधा कृष्ण के विचार वर्तमान परिस्थितियों में सही उतरते हैं। शिक्षकों के गिरते हुए आचार्य - विचार और मानसिक स्तर छात्रों की अनुशासनहीनता और विचारों के प्रति ऐसे शिक्षा शास्त्रियों की शैक्षिक विचारों पर ध्यान अवश्य जाना चाहिए, अन्यथा सबल से सबल शिक्षा दर्शन और अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रणाली भी अन्य उपयोगी होगी। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम एवं डॉ राधाकृष्णन द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रम सामान्य पाठ्यक्रम है। वे विज्ञान व आध्यात्म में समन्वय चाहते थे। वे तकनीकी विषयों के साथ-साथ साहित्य और कला की शिक्षा भी देना चाहते थे। दोनों ही मनीषी व्यवहारिक, जीवनोपयोगी और राष्ट्रोपयोगी पाठ्यक्रम पर बल देते थे। व्यावसायिक पाठ्यक्रम के महत्व को दोनों ही शिक्षाविद स्वीकार करते थे।

मूल शब्द - महान शिक्षाविद, शैक्षिक विचारों, अनुशासन, शिक्षणविधि

प्रस्तावना

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा से मानव का व्यक्तित्व संपूर्ण विनम्र और संसार के लिए उपयोगी बनता है।सही शिक्षा से मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और विश्व बंधुता में बढ़ोतरी होती है। यह गुण शिक्षा के

आधार होते हैं।अंततः शिक्षा का उद्देश्य सत्य की खोज। इस खोज का केंद्र अध्यापक होता है जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से जीवन में और व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। छात्रों को जो भी कठिनाई होती है, जो भी जिज्ञासा होती है, जो वह जानना चाहते हैं, उन सब पर वे अध्यापक पर ही निर्भर करते हैं। उनके लिए उनका अध्यापक एक तरह से एन्साइक्लोपीडिया है जिसके पास सभी प्रश्नों के उत्तर हैं। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में ग्रहण कर मानवीय गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र में इसका प्रसार करता है तो मौजूदा 25वीं सदी में दुनिया काफी सुंदर हो जाएगी। डॉ. कलाम कहते हैं - शिक्षा के संबंध में मेरा विचार यह है उसके द्वारा बच्चों की रचनात्मक शक्ति विकसित की जानी चाहिए। शिक्षा का अर्थ है- एक जागृत समाज की रचना। जागृत समाज के मुख्य तीन अंग है:

1. ऐसी शिक्षा प्रणाली जिसके निर्धारित मूल्य हो।
2. धर्म का आध्यात्मिक शक्ति में परिवर्तन।
3. आर्थिक विकास।

स्कूल जाने का परिणाम यह होना चाहिए कि युवा ज्ञान आधारित समाज के अंग बने और स्वयं अपने विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास में भी अपना योगदान करें। राधाकृष्णन ने शिक्षा को अत्यंत व्यापक रूप में लिया था। उन्होंने शिक्षा को जीवन के लिए आवश्यक माना है लेकिन जीवन के आध्यात्मिक विकास पर अधिक बल दिया है। उनका कहना था कि जब हम किसी क्षेत्र में संघर्ष करते हैं तो सर्वप्रथम हमें शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा ही मनुष्य को भौतिक वातावरण की शक्तियों से संघर्ष करने के लिए समर्थ बनती है जिससे वह निर्धनता को समृद्धि में बदल सके। शिक्षा ही व्यक्ति को आंतरिक संघर्ष पर विजय प्राप्त करने के योग बनाती हैं। जिससे वह अपनी हैं प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर सके। वह शिक्षा को ज्ञान तथा कौशल के विकास के लिए ही आवश्यक नहीं मानते वरन् जीवन यापन की कला में दीक्षित करने के लिए भी अनिवार्य मानते हैं। उनके अनुसार हम शिक्षक से सीखते हैं स्वयं से सीखते हैं तथा जीवन और उनके अनुभवों से भी सीखते हैं।

शिक्षा के उद्देश्य

डॉ. अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य रोजगार का सृजन होना चाहिए, ना की बेरोजगारी की संख्या बढ़ाना। प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए कि बच्चों की रचनात्मक शक्ति की बढ़ोतरी। सेकेंडरी शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए बच्चों में ऐसा आत्मविश्वास उत्पन्न करना कि वह अपना स्वयं का कोई छोटा उद्योग खड़ा कर सके या उच्च शिक्षा और शोध के क्षेत्र में प्रवेश कर सकें। या उच्च शिक्षा के संस्थान विश्व स्तरीय होने चाहिए जो उद्योग

जगत के साथ मिलकर कार्य करें। इसके साथ-साथ डॉ अब्दुल कलाम ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा के उद्देश्य एवं महत्व को समझाया है। हालांकि अक्षर ज्ञान होना किसी नागरिक के लिए अनिवार्य है, फिर भी सिर्फ इसी की बदौलत लाभकारी रोजगार मिलना संभव नहीं। जिन लोगों ने केवल हाई स्कूल तक पढ़ाई की है उनमें सही और आर्थिक रूप से उपयोगी हुनर का होना जरूरी है। देश में ऐसे नौजवानों की काफी बड़ी तादाद है। उन्होंने रोजगार पाने या अपना कारोबार शुरू करने के लिए प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है। उन्हें विनिर्माण, मरम्मत होटल, स्वास्थ्य सेवा, फूटकर कारोबार या फिर इलेक्ट्रीशियन, बढ़ई के कार्य में प्रशिक्षित किया जा सकता है। आधुनिक प्रतियोगी अर्थव्यवस्था में स्तरीय हुनर की आवश्यकता है और हमारा दायित्व है कि हम अपने नागरिकों को ऐसे हुनर में होशियार बनाएं।

डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण में भौतिक दृष्टिकोण के स्थान पर आध्यात्मिक उन्नयन को प्रमुख स्थान दिया है। उनके अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है- ज्ञान का अर्जन, ज्ञान का रूपांतरण, अंतर्दृष्टि का विकास, आध्यात्मिक उन्नयन, चारित्रिक उन्माय, वैज्ञानिक मस्तिष्क का निर्माण, सच्ची धार्मिकता की भावना, लोकतंत्र का संरक्षण, राष्ट्रवाद की भावना, विश्वबन्धुत्व की भावना। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना है। ज्ञान के बिना तो आध्यात्मिक विकास हो सकता है और न ही विवेक प्राप्ति हो सकता है। इसी ज्ञान के लिए विज्ञान, कला, साहित्य और दर्शन आदि का अध्ययन किया जाता है। इसी संदर्भ में विशेष बात जो राधाकृष्णन ने कही है वह यह है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं है वरन् और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की प्यास बालकों के अंदर उत्पन्न करती है वे कहते हैं कि हमें उनके अंदर ज्ञान के संवर्धन के लिए उत्साह पैदा करना चाहिए। वह यह भी कहते हैं कि ज्ञान के रूपांतरण के पश्चात ही ज्ञान प्राप्ति का उद्देश्य सफल होता है।

राधाकृष्णन के अनुसार जीवन में वास्तविक सुख और शांति आध्यात्मिक विकास से ही संभव है। अतः शिक्षा का उद्देश्य आध्यात्मिक विकास होना चाहिये। उनके शब्दों में शिक्षा का उद्देश्य है हमारे व्यक्तित्व और अस्तित्व को सार्थक बनाना और ऐसी शक्ति प्रदान करना जिसमें, हम आध्यात्मिक जड़ता को समाप्त कर सकें और आध्यात्मिक संवेदना को शुद्ध कर सकें। चारित्रिक उन्नयन को राधाकृष्णन शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य मानते हैं। उनके अनुसार चरित्र के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं हो सकती। उन्हीं के शब्दों में चरित्र ही प्रारब्ध है। चरित्र के द्वारा राष्ट्र के भाग्य का निर्माण होता है। जिस देश के देशवासियों का चरित्र नीचा होता है,वह देश कभी भी महान नहीं हो सकता है। यदि हम एक महान राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें अधिक संख्या में युवक युक्तियां को इस प्रकार शिक्षित करना होगा कि उनमें चरित्र का बल हो।

शिक्षण विधियाँ

डॉ अब्दुल कलाम ने निम्नलिखित शिक्षण विधियों को शिक्षण में महत्वपूर्ण बताया है-

प्रश्नोत्तर विधि- डॉ एपीजे अब्दुल कलाम सलाह देते हैं थे की कक्षा में एक शिक्षक को कम से कम 20 मिनट प्रश्न पूछने पर खर्च करना चाहिए। प्रश्नों के माध्यम से बच्चों में स्पष्ट सोच उत्पन्न होती है। डॉ कलाम कहते थे कि शिक्षकों द्वारा ऐसे प्रश्न पूछे जाने चाहिए जो चुनौती पूर्ण हो और छात्र सोचने एवं उत्तर देने के लिए अनुकुरण कर सके।

वाद विवाद विधि - यह विधि शिक्षक एवं छात्रों के बीच अंत: क्रिया पर जोर देती है। इस विधि की सफलता के लिए आवश्यक है कि छात्रों को अपने विचारों को खुलकर रखने की स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए। कलाम प्रत्येक सरल और जटिल समस्या को शिक्षक एवं छात्रों को आपसी समन्वय एवं सहयोग द्वारा हल करने पर बल देते हैं। डॉ कलाम छात्रों को खुले दिमाग से वाद विवाद एवं स्वतंत्रता से अपने विचारों को प्रस्तुत करने पर भी बल देते हैं।

ट्यूटोरियल विधि - डॉक्टर कलाम अपनी शिक्षा दर्शन में शिक्षक एवं अधिगम के लिए ट्यूटोरियल (शिक्षण संबंधी) विधि का उत्साह पूर्ण समर्थन करते हैं तथा इसके पक्ष में वे कहते हैं कि ट्यूटोरियल एवं विशेष परीक्षण छात्रों में विभिन्न प्रकार की क्षमताएं विकसित करने के लिए आवश्यक है।

प्रयोग विधि - डॉ कलाम कहते थे कि विज्ञान एक आकर्षक विषय है और एक वैज्ञानिक के लिए यह जीवन पर्यन्त मिशन है। विज्ञान में स्वामित्व प्राप्त के लिए गणित की समझ आवश्यक है। गणित के साथ विज्ञान का समन्वय चमकदार होता है।अतः डॉ कलाम प्रयोग विधि का समर्थन शिक्षण में महत्वपूर्ण मानते हैं और कहते हैं कि प्रयोग एवं सिद्धांतों के सम्मिश्रण की आवश्यकता है।

राधाकृष्णन ने शिक्षण प्रक्रिया को भी तीन प्रकार का बताया है - 1. ज्ञानात्मक - इसके अंतर्गत श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन को स्थान प्रदान किया जाता है। 2. भावात्मक - इसमें अनुभूति पर बल दिया जाता है और जो शिक्षार्थी प्रकृति से भावना प्रधान होते हैं। उनके लिए तर्क आदि पर आधारित विधि अधिक प्रभावित नहीं होती। इन शिक्षार्थियों में प्रेम, दया, कोमलता आदि के गुण प्रमुखता लिए हुये होते हैं। 3. कार्यात्मक - क्रिया प्रधान विषयों के शिक्षा के लिए इस विधि को उपयुक्त बताया है। कार्य के द्वारा ज्ञान को शीघ्रता से अधिगम किया जा सकता है। " करके सीखना ' की विधि इस प्रकार की विद्यार्थियों के लिए लाभकारी होती है। व्यक्तिगत कर्म के कारण है और मनुष्य का शारीरिक संगठन एक कार्य करने वाला यंत्र समुच्चय है।

शिक्षक

डॉ कलाम कहते थे कि " मैं मानता हूं कि दुनिया में समाज के लिए शिक्षक से अधिक महत्वपूर्ण दायित्व किसी अन्य का नहीं है।" शिक्षक देश की रीड होते हैं। वह ऐसे स्तंभ होते हैं जिनके बल पर सभी प्रकार की आकांक्षाएँ साकार होती हैं। एक शिक्षक में अपने पेशे की प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। उसे शिक्षण एवं बच्चों से प्रेम होना चाहिए। उसे ने सिर्फ विषय की सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक बाते पढ़ानी चाहिए, बल्कि छात्रों में हमारी महान्य सभ्यता की विरासत एवं सामाजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षक छात्रों का ऐसा विकास करें कि वे बिना किसी शिक्षक की सहायता लिए स्वयं सीखने में सक्षम हो सकें। राधाकृष्णन ने भी शिक्षक को अत्यधिक उच्च और गरिमापूर्ण स्थान दिया और समाज में उसकी भूमिका को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना। उन्होंने कहा कि ' विशाल भवन और साधन किसी महान शिक्षक को स्थानापनन नहीं कर सकते। उनका कथन है कि हम किस प्रकार की शिक्षा अपने युवकों को दे सकते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस प्रकार की शिक्षक प्राप्त कर सकते हैं। वे मानते हैं कि शिक्षक की बौद्धिक परम्पराओं और प्राविधिक कौशलों को एक सन्तति से दूसरी सन्तति को हस्तांतरित करता है, वही सभ्यता के दीप को प्रज्जवलित रखता है। जिस राष्ट्र ने शिक्षक के महत्व को नहीं समझा उनके लिए भविष्य की कोई आशा नहीं है।

शिक्षार्थी

डॉ कलाम कहते थे - एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुण है उसकी अपनी ईमानदारी और दूसरों के प्रति संवेदनशील का भाव यह गुण आपको निस्संदेह एक आदर्श नागरिक बनने में मदद करेंगे।

छात्रों के लिए छः सूत्री शपथ

1. मैं अपनी पढ़ाई लगन पूरक करूंगा और उसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करूंगा।
2. मैं कम से कम पांच पौधे लगाऊंगा और उनके विकास के लिए देखरेख करता रहूंगा।
3. मैं अपने दुखी भाई बहनों के दुख को दूर करने के लिए लगातार प्रयास करता रहूंगा।
4. मैं एक तेजस्वी नागरिक बनने की दिशा में कार्य करूंगा और परिवार को सच्ची राह पर ले चलूंगा।
5. मैं मानसिक और शारीरिक विकलांग व्यक्तियों का दोस्त बना रहूंगा और उन्हें आम लोगों जैसे सहज महसूस करने के लिए प्रयास करता रहूंगा।

6. मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अपने देश को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए ईमानदारी से परिश्रम करूंगा।

राधाकृष्णन शिक्षार्थियों से अनेक आशाएं और अपेक्षाएं रखते हैं जिनमें मुख्य निम्न प्रकार है - 1. शिक्षार्थी को ज्ञान पिपासु होना चाहिए और शिक्षा प्राप्त करने के लिए पूर्ण समर्पित होना चाहिए। 2. शिक्षार्थी को जितेन्द्रीय होना चाहिए। 3. शिक्षार्थी को विवेकशील होना चाहिए। 4. शिक्षार्थी को आत्म संयमी और निष्कामी विवेकशील होना चाहिए। 5. शिक्षार्थी को अनुशासन प्रिय होना चाहिए। 6. शिक्षार्थी को सहनशील और धैर्यवान होना चाहिए। 7. शिक्षार्थी को लग्नशील और उत्साही होना चाहिए। 8. शिक्षार्थी में अपने शिक्षक के प्रति अपार श्रद्धा और पूर्ण विश्वास होना चाहिए। शिक्षार्थी को प्रेम, दया, और ईमानदारी, आज्ञापालन, विनम्रता, क्षमा, पवित्रता, सच्चरित्रता, कर्तव्यनिष्ठा और त्याग आदि गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए।

अनुशासन

डॉ कलाम छात्रों में आत्म अनुशासन की भावना विकसित करना चाहते हैं। अनुशासन के सम्बन्ध में उनके विचार इस प्रकार से है:- ० आत्म अनुशासन हमें संसारिक इच्छाओं द्वारा दूषित होने एवं भीषण आक्रमण से बचाव हेतु एक दुर्ग के रूप में कार्य करता है अन्ततः आत्म अनुशासित होने से बाध्य वातावरण का दुष्प्रभाव असफल रहता है।०प्रेम, विश्वास और उत्तरदायित्व का विरोध होने पर भी आत्म अनुशासन परिवार में खुशियां लाने में महत्वपूर्ण होता है० अनुशासन का अर्थ होता है कि हम सभी को दिन प्रतिदिन जीने के साथ-साथ ईमानदारी, वफादारी, और धैर्यपूर्णता के मूल्यों का अनुकरण करना चाहिए। हमें सकारात्मक सोच एकत्र करनी चाहिए कि हम देश के प्रति क्या कर रहे हैं और इसके साथ-साथ ही हमें अपने स्वयं के लिए भी लाभ प्राप्त होंगे। ० कठिन परिश्रम और अनुशासन के बिना जीवन की वास्तविकता कुछ नहीं है। ० अनुशासन की संवेदना उत्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। ० डॉक्टर कलाम सुझाव देते हैं कि माध्यमिक स्तर पर युवाओं को कम से कम 18 माह की एनसीएसी का प्रशिक्षण राजनीति, व्यवसाय, ब्यूरोक्रेसी, वैज्ञानिक, अनुसरण, खेलकूद आदि क्षेत्रों में अनुशासित रहेगा।

डॉ राधाकृष्णन ने अनुशासन शिक्षा व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। इसके अंतर्गत व्यवहार, आंतरिक, प्रेरणा, आत्म नियंत्रण, आत्म संयम, विनय, कर्तव्य परायणता आदि सभी कुछ आ जाते हैं। अनुशासन का उद्देश्य शिक्षार्थियों को ज्ञान शक्तियों, क्षमताओं, योग्यता, आदतों, रुचियों, मूल्य और आदर्शों को प्राप्त करने में सहायता देना है जिससे शिक्षार्थी ही आदर्श नागरिक बनकर देश और समाज के विकास और उत्थान में सहायता दे सकते हैं।

निष्कर्ष

डॉ राधाकृष्णन डॉ एपीजे अब्दुल कलाम कि शैक्षिक उद्देश्य संबंधी विचार आज की परिस्थितियों में बहुत ही प्रासंगिक हैं। वे शिक्षा के द्वारा बालक का नैतिक और चारित्रिक विकास करना चाहते हैं। बालकों में स्वावलम्बन की भावना पैदा करना चाहते हैं। उन्हें आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। उनका सांस्कृतिक विकास करना चाहते हैं । उनमें मानवीय मूल्य को विकसित करना चाहते हैं। उनमें सामाजिकता कि भावना पैदा करना चाहते हैं उनमे राष्ट्रीयता और अंतरराष्ट्रीयता के भाव उत्पन्न करना चाहते हैं। उनमें नेतृत्व के गुणों को विकसित करना चाहते हैं। इस प्रकार यह दोनों शैक्षिक उद्देश्यों के द्वारा श्रेष्ठ मानव का निर्माण करना चाहते थे। आज भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विचारकों और शिक्षकों के सामने जब अनुशासनहीनता, चरित्रहीनता, नैतिक एवं आध्यात्मिक तत्वों का अभाव जैसी अनेक समस्याएं भयंकर रूप में उपस्थित हैं।इन समस्याओं को दूर करने के लिए भारत में शिक्षा का पुनर्गठन करने की आवश्यकता है और शैक्षिक उद्देश्य उपनिषदकालीन शिक्षा से ग्रहण किए जा सकते हैं। तथा पाठ्यक्रम में नैतिक, आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ समाजोपयोगी विषय सम्मिलित करने होंगे तथा शिक्षा आत्मनिर्भरतापूर्ण बनाने के लिए शिक्षा व्यवसायोन्मुखी बनानी होगी।

सन्दर्भ सूची

1. आर्यनायकम: वर्तमान शिक्षा की गम्भीर स्थिति, हिन्दुस्तानी तालीम संघ, सेवाग्राम, वर्धा 1954
2. सिंह,राजेन्द्रपाल : राधाकृष्णन शिक्षाशास्त्री के रुप में, एशियन पत्लिशर्स, जालन्धर सिटी 1968
3. पाण्डेय,रआमशक्ल : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, विनोद पुस्तकमन्दिर आगरा 1996
4. गुप्त, रामबाबू: भारतीय शिक्षा शास्त्री, रत्न प्रकाशन मन्दिर आगरा 2004
5. भारत 2020: नई सहस्त्राब्दी के लिए एक दृष्टिकोण 1998
6. विंग्स ऑफ फायर: एन ऑटोबायोग्राफी 1999